पाठ-अभ्यास के उत्तर

1. (*i*) आँखों के आगे अँधेरा छा गया। (*ii*) आँखें दिखाओ (*iii*) इशारों पर नाचता है
(*iv*) इस हाथ देना उस हाथ लेना (*v*) उल्लू बनाता (*vi*) ऊँचा सुनते हैं
(*vii*) कंपकपी छूट गई (*viii*) किस्मत खुल गई

2. (*i*) बहुत अधिक खुश होना। (*ii*) गहरी नींद में सोना (*iii*) घबरा जाना।
(*iv*) बहुत परिश्रम करना। (*v*) काम में मन न लगना। (*vi*) बहाना बनाना।
(*vii*) प्रशंसा करना (*viii*) चकित रह जाना

3. (*i*) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाने के बाद चारों तरफ वैभव की तारीफ़ के फूल बाँधे जा रहे थे।
(*ii*) एक छोटे बच्चे द्वारा कविता पाठ किए जाने पर सब दंग रह गए।
(*iii*) वह अपने ही घर में रात को चोरों की तरह दबे पाँव आता है।
(*iv*) भागते-भागते चोर का दम फूल गया।
(*v*) वह आज नहीं आया, जरूर दाल में कुछ काला है।
(*vi*) धीरे बोलो, दीवारों के भी कान होते हैं।
(*vii*) उस पर अभिनेता बनने का धुन सवार था।
(*viii*) परीक्षा में फेल होकर दिवाकर ने अपने पिता की नाक कटवा दी।

4. (*i*) → (झ) (*ii*) → (च) (*iii*) → (क) (*iv*) → (ञ) (*v*) → (ख)
(*vi*) → (ग) (*vii*) → (घ) (*viii*) → (ङ) (*ix*) → (छ) (*x*) → (ज)

5. (*i*) आग बबूला होना (*ii*) आँखों में धूल झोंकना (*iii*) वशीभूत होना
(*iv*) उल्लू बनाना (*v*) थर-थर काँपना (*vi*) पंगा लेना
(*vii*) खुशी से फूला न समाना (*viii*) घोड़े बेचकर सोना (*vi*) पंगा लेना

6. (*i*) रानी लक्ष्मीबाई का घोड़ा हवा से बातें करता था।
(*ii*) तुम्हारी बातें सुनते-सुनते तो मेरे कान पक गए हैं।
(*iii*) आजकल नौकरी की तलाश में बेचारा इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा है।
(*iv*) वह खुदगर्ज़ इंसान है, किसी को मक्खन नहीं लगा सकता।
(*v*) प्रश्न का हल करना तो उसके लिए बाएँ हाथ का खेल है।
(*vi*) सुबह से कुछ नहीं खाया, इसलिए मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

7. (*i*) गुणहीन लोगों में कम गुणों वाला व्यक्ति ही बहुत गुणी माना जाता है।
(*ii*) अच्छे कार्य का परिणाम भी अच्छा ही होना। (*iii*) अपने इलाके में निर्बल भी बलवान होता है।
(*iv*) स्वयं मुसीबत खड़ी करना। (*v*) सभी ओर संकट।
(*vi*) तत्काल परिणाम मिलना। (*vii*) दोषी ही निर्दोष पर दोषारोपण करे।
(*viii*) एक कार्य के साथ दूसरा कार्य हो जाना।

8. (*i*) नौकरी एक है और प्रत्याशी अनेक। यह तो वही बात हुई—एक अनार सौ बीमार।

(*ii*) गलती केवल सुरेश की नहीं है, तुम्हारी भी होगी क्योंकि एक हाथ से ताली कभी नहीं बजती।

(*iii*) बेटे को दुकान खुलवाने के लिए दीनानाथ ने बैंक से ऋण लिया था, पर घर में चोरी हो गई और सारा पैसा चोर ले गए। बेचारा बहुत परेशान है। किसी ने ठीक कहा है, कंगाली में आटा गीला।

(*iv*) शर्मा जी ने ऋण लिया पर जीते जी चुका न पाए। अब उनका बेटा पेट काट-काटकर ऋण चुका रहा है। इसे कहते हैं—करे कोई, भरे कोई।

(*v*) मदन के लिए पढ़ाई-लिखाई तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(*vi*) व्यापार में कुमार जी ने अपनी सारी पूँजी लगा दी, लेकिन नुकसान हो गया। इसे ही कहते हैं—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(*vii*) डाके के माल के बँटवारे को लेकर डाकुओं में झगड़ा हो गया। उनमें से एक ने पुलिस को खबर कर दी और सारे माल सहित पकड़े गए। सच ही कहा गया है—घर का भेदी लंका ढाए।

(*viii*) अर्थाभाव में थोड़ी-सी सहायता भी दुखी को तिनक का सहारा लगती है।

9. (*i*) → (ङ) (*ii*) → (च) (*iii*) → (झ) (*iv*) → (ज) (*v*) → (ञ)
(*vi*) → (ग) (*vii*) → (ख) (*viii*) → (घ) (*ix*) → (क) (*x*) → (छ)

कुछ करके सीखिए

- छात्र स्वयं करें।